RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-08
August-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

मुस्लिम महिलाओं की राजनैतिक जागरूकता व सहभागिता

(विकासखण्ड़ रूड़की के विशेष सन्दर्भ में)

शाईस्ता परवीन

शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, हे.न.ब.ग.विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Aug 2019

Keywords
मुस्लिम महिलाएं, राजनैतिक जागरूकता, सहभागिता, रूड़की

***Corresponding Author**
Email: pshaista14[at]gmail.com

ABSTRACT

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में नयी लोकतांत्रिक शासन की स्थापना हुई, जिसमें महिलाओं को भी पुरूषों के समान राजनैतिक अधिकार मिलें। इस लोकतंत्र में यह महत्वपूर्ण तथ्य उभर कर आए कि सभी वर्ग की महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता एवं सहभागिता अनिवार्य है। क्योंकि अवसर मिलने पर महिलाएं राजनीतिक भूमिका का पूर्णतया निर्वाहन कर सकती है। उनमें परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने की अद्भुत क्षमता होती है। प्रस्तुत शोध पत्र विकासखण्ड़ रूड़की की मुस्लिम महिलाओं की राजनैतिक जागरूकता व सहभागिता के आंकलन पर केन्द्रित हैं। राजनीतिक सहभागिता मुस्लिम महिलाओं की आवश्यकता ही नहीं अपितु हक भी है जिसके लिए सभी स्तरों पर प्रयास किये जाने चाहिये, तभी उनकी राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि होगी। इस सन्दर्भ में विकासखण्ड रूड़की की 20 ग्राम पंचायतों की 10–10 मुस्लिम महिलाओं का चयन किया गया है तथा साक्षात्कार द्वारा उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी को सारणीकरत कर उसका प्रतिशत निकाल कर विश्लेषण किया गया हैं।

प्रस्तावना – मुस्लमान भारत का सबसे बड़ा अल्पसंख्यक वर्ग है, परन्तु भारत के अन्य अल्पसंख्यक वर्गों की तुलना में यह वर्ग आर्थिक स्तर पर सबसे निम्न, सामाजिक स्तर पर सबसे पिछड़ा व राजनीतिक स्तर पर हाशिए पर खड़ा है। भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में मुस्लिमों की दशा व दिशा का विश्लेषण किया जाऐ तो मुसलमानों की भागीदारी मात्रा वोट देने तक सीमित है। उनकी वोट देने के प्रति इतनी जागरूकता और सक्रियता ने उन्हें वोट बैंक के रूप में तब्दील कर दिया है, इस पर बंटी–बिखरी मुस्लिम राजनीति के कारण हालात आज भी बदत्तर हैं। यह मुसलमानों की विडम्बना ही कही जाऐंगी कि आजादी के 70 वर्षों बाद भी न तो उनका कोई राष्ट्रीय नेता जन्म नहीं ले सका और न ही उनके पास आधुनिक सोच वाले सामाजिक और धर्मिक नेतृत्व रहा है।

यदि मुस्लिम महिलाओं की बात की जाये तो भारतीय मुस्लिम समाज में महिलाएं अधिकांशतः पिछड़ी, असहाय और वंचित स्थिति में रही हैं। भारतीय राजनीति में भी मुस्लिम महिलाओं की सहभागिता नगण्य रही है। वह तो केवल मतदाता के रूप में सहभागी है। नेतृत्व एवं प्रतिनिधि के रूप में मुस्लिम महिलाएँ अन्य क्षेत्रों की तरह यहां भी पिछड़ी नजर आती हैं। मुस्लिम महिलाओं का संसद में पर्याप्त प्रतिनिधित्व नही है और ना ही राजनीतिक दलों द्वारा इस दिशा में कोई सार्थक पहल की जा रही है। प्रथम लोकसभा में किसी भी मुस्लिम महिला ने बतौर उम्मीदवार चुनाव नहीं लड़ा। इसी प्रकार चतुर्थ, पंचम, नवीं, दसवीं, बारहवीं लोकसभाओं में कोई मुस्लिम महिला सांसद निर्वाचित नहीं हुई। वर्तमान 17वीं लोकसभा तक मात्र 24 मुस्लिम महिला सांसद निर्वाचित हुई है। जबकि प्रथम लोकसभा से वर्तमान लोकसभा तक लगभग 450 मुस्लिम महिला सांसद निर्वाचित होनी चाहिए थी। चुंकि शोधकर्ती उत्तराखण्ड़ राज्य से सम्बन्धित है, यदि उत्तराखण्ड़ के सम्बन्ध देखा जाये तो वर्तमान लोकसभा या राज्यसभा तक कोई भी मुस्लिम महिला सांसद निर्वाचित नहीं हुई और न ही किसी विधानसभा में मुस्लिम महिला विधायक निर्वाचित हुई, जो मुस्लिम महिलाओं की दयनीय राजनीतिक सहभागिता को दर्शाता है।

भारतीय लोकतंत्र में भले ही राष्ट्रीय राजनीति में मुस्लिम महिलाओं की सहभागिता नगण्य है, परंतु ग्राम पंचायत व जिला पंचायत में उनकी सहभागिता धीरे–धीरे बढ़ रही है। 73 वें तथा 74 वें संविधान संशोधन से प्राप्त आरक्षण के कारण महिलाओं को राजनीति में आने का अवसर प्राप्त हुआ। 110वें एवं 112 वें संशोधन द्वारा पंचायतीयराज एवं नगरीय निकाय में महिला आरक्षण को बढ़ाकर 50 प्रतिशत कर दिया गया। जिससे न केवल अन्य वर्ग की महिलाएं बल्कि मुस्लिम महिलाएँ भी इस आरक्षण का लाभ उठा रही है।

प्रस्तुत शोध पत्र में शोधकर्ती द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि अध्ययनगत ग्राम पंचायतों में मुस्लिम महिलाओं की राजनैतिक जागरूकता व सहभागिता का स्तर क्या है?

अध्ययन का उदेश्य – विकासखण्ड रूड़की की मुस्लिम महिलाओं की राजनैतिक जागरूकता व सहभागिता की वास्तविक स्थिति को जानना ही प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अध्ययन क्षेत्र – प्रस्तुत शोध पत्र के कार्य सम्पादन हेतु प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए अध्ययन क्षेत्र हरिद्वार जिले के विकासखण्ड रूड़की का चयन किया गया है। शोधार्थी द्वारा उत्तराखण्ड राज्य के जनपद हरिद्वार में स्थित विकासखण्ड रूड़की की मुस्लिम महिलाओं को जनसंख्या के रूप में चुना गया है। 2011 की जनगणना के अनुसार इस विकास खण्ड की जनसंख्या 301268 है जिसमें 158879 पुरूष तथा 142389 महिलाएं हैं। विकासखण्ड रूडकी में 59 ग्राम पंचायतें हैं। इन ग्राम पंचायतों में से मुस्लिम बहुल ग्राम पंचायतों का चयन किया गया है।

अध्ययन पद्वति – प्रस्तुत शोध पत्र में आंकड़े मुख्यतः प्राथमिक स्त्रोत से एकत्रित किए गए हैं। विकासखण्ड रूड़की की 20 ग्राम पंचायतों की 10–10 मुस्लिम महिलाओं से प्रत्यक्ष सपंर्क कर साक्षात्कार अनसुची के माध्यम से प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया हैं। अध्ययन क्षेत्र के उत्तरदाताओ से प्राप्त जानकारी को सारणीकरत कर उसका प्रतिशत निकाल कर विश्लेषण किया गया हैं। राजनितिक जागरूकता व सहभागिता की स्थिति को स्पष्ट करने हेतु द्वितीयक स्त्रोत का भी उपयोग किया गया हैं।

राजनैतिक सहभागिता– निम्न तालिकाओं के माध्यम से अध्ययनगत ग्रामों में मुस्लिम महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता की वास्तिविक स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है।

तालिका सं0 1– मतदाता के रूप में सहभागिता

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	193	96.50
2	नहीं	2	1.00
3	कोई प्रत्युत्तर नही	5	2.50
योग		200	100

लोकतंत्रा प्रणाली में जनता मतदान के माध्यम से अपने प्रतिनिधियों का चुनाव कर अपनी राजनीतिक सहभागिता निभाती है तथा इस हेतु वे मतदान में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती है, इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए मुस्लिम महिलाएँ आम चुनावों में मतदान को अपना कर्त्तव्य मानती हैं। उपरोक्त तालिका सं0 1 से स्पष्ट है कि 96.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ आम चुनावों में मतदाता के रूप में सहभागी हैं।

तालिका सं0 2– प्रतिनिधी के रूप में सहभागिता

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	33	16.50
2	नहीं	157	78.50
3	कोई प्रत्युत्तर नही	10	5.00
योग		200	100

उपरोक्त तालिका सं0 2 से स्पष्ट है कि 78.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ प्रतिनिधी के रूप में सहभागी नही है। केवल 16.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ प्रतिनिधी के रूप में सहभागी है। 5 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने काई प्रत्युत्तर नही दिया। 78.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं का मानना है कि वे स्वतंत्र रूप से चुनाव नही लड सकती, वे राजनीति को पुरूष का ही कार्य क्षेत्र मानती है।

तालिका सं0 3– राजनैतिक दल के कार्यकर्ता के रूप में सहभागिता

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	10	5
2	नहीं	170	85
3	कोई प्रत्युत्तर नही	20	10
योग		200	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 85 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ किसी भी राजनैतिक दल के कार्यकर्ता के रूप में सहभागी नही है। इन महिलीओं का मानना है कि राजनीति में सक्रिय होने के लिए पर्दा त्यागना आवश्यक है। मात्र 5 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ ही किसी राजनैतिक दल के कार्यकर्ता के रूप में सहभागी है। इन मुस्लिम महिलाओं का मानना है कि पर्दे में रह कर भी राजनीति में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में सहभागी हो सकती है।

तालिका सं0 4– राजनैतिक आन्दोलन में सहभागिता

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	15	7.50
2	नहीं	173	86.50
3	कोई प्रत्युत्तर नही	12	6.00
योग		200	100

परिवारिक बाध्यता, अशिक्षा, गरीबी व राजनीतिक माहौल की कमी आदि मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक आकांक्षाओं के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है। वस्तुतः 86.5 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ राजनीतिक आन्दोलनों में सहभागी नही होती हैं। केवल 7.5 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ ही राजनैतिक आन्दोलन में सहभागी है।

तालिका सं0 5– राजनैतिक गतिविधियों में सहभागिता

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	13	6.50
2	नहीं	171	85.50
3	कोई प्रत्युत्तर नही	16	8
योग		200	100

मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक गतिविधियों में सहभागिता नगण्य रहती है। 85.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने चुनाव प्रचार, राजनैतिक रैलियों या सभाओं में भाग लेने के सन्दर्भ में असहमति व्यक्त की है। इन महिलाओं का यह भी मानना है

RRIJM 2015, All Rights Reserved

कि अधिकतर मुस्लिम महिलाओं के पारिवारिक सदस्य किसी भी राजनीतिक दल के सदस्य या पदाधिकारी नही हैं या पर्दा व पितृसत्तात्मक व्यखयाओं के कारण वह राजनैतिक गतिविधियों में भाग नही लेती है। केवल 6.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने मानना है कि वे राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेती है।

राजनैतिक जागरूकता– प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत विकासखण्ड रूड़की में मुस्लिम महिलाओं की राजनीति के प्रति जागरूकता का अध्ययन निम्न तालिकाओं द्वारा किया गया है।

तालिका सं0 6– प्रतिनिधि चुनने की स्वतंत्रता

क्र0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	5	2.5
2	नहीं	190	95
3	कोई प्रत्युत्तर नही	5	2.5
योग		200	100

उपरोक्त तालिका सं0 6 से स्पष्ट है कि 95 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएं उम्मीदवार चुनने के लिए जागरूक नही है। मुस्लिम महिलाओं पर दल विशेष का प्रभाव विशेष रूप से दृष्टिगत होता है। वस्तुतः उम्मीदवार के तौर पर महिलाएं किसी विशेष दल को प्राथमिकता देती हैं, या उन्हीं उम्मीदवारों को मत देती हैं जिन्हें उनके पति या पिता अपना मत देते हैं। तालिका सं0 1 से स्पष्ट है कि मुस्लिम महिलाएँ मतदान में बढ़–चढ़कर भाग लेती हैं, अतः वे केवल मतदान करने के लिए ही जागरूक है।

तालिका सं0 7– राजनैतिक नेतृत्व की आवश्यकता

क्र0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	165	82.50
2	नहीं	15	7.50
3	कोई प्रत्युत्तर नही	20	10
योग		200	100

82.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं का मानना है कि उन्हें महिला राजनैतिक नेतृत्व की आवश्यकता है जो उनकी दशा व दिशा दोनो को समझ सके। उनका मानना है कि अधिकतर मुस्लिम महिलाएं अपनी सामाजिक पहचान को लेकर ही संघर्षरत है। 7.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं का मानना है कि उन्हें महिला राजनैतिक नेतृत्व की आवश्यकता नही है, बल्कि उन्हें अपनी सामयजिक व राजनैतिक स्थिति के लिए स्वयं प्रयास करने होंगे। 10 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कोई प्रत्युत्तर नही दिया।

तालिका सं0 8– राष्ट्रीय स्तर पर राजनैतिक जानकारी

क्र0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	30	15
2	नहीं	140	70
3	कोई प्रत्युत्तर नही	30	15
योग		200	100

प्रत्येक नागरिक हेतु राजनैतिक व्यवस्था का ज्ञान अति आवश्यक है क्योंकि राजनैतिक व्यवस्था किसी भी राष्ट्र के राजनैतिक विकास का दर्पण होती है। किन्तु तथ्यों के विश्लेषण से पता चलता है कि मुस्लिम महिलाओं में भारतीय राजनैतिक व्यवस्था के प्रति जागरूकता का स्तर निम्न है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि मात्र 15 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ भारतीय राष्ट्रीय राजनैतिक व्यवस्था की जानकारी रखती हैं। इससे सम्बंधित प्रश्न पुछने पर ज्ञात हुआ कि वे केवल इतना जानकारी रखती हैं कि केन्द्र में किस दल की सरकार है। 15 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने इस सम्बन्ध में कोई प्रत्युत्तर नही दिया। जबकि 70 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ भारतीय राष्ट्रीय राजनैतिक व्यवस्था की जानकारी नही रखती हैं। वे यु0 पी0 ए0 या एन0 डी0 ए0 गठबन्धन क्या है, की जानकारी भी नही रखती है।

तालिका सं0 9– राज्य स्तर पर राजनैतिक जानकारी

क्र0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	70	35
2	नहीं	100	50
3	कोई प्रत्युत्तर नही	30	15
योग		200	100

राज्य स्तर पर भी मुस्लिम महिलाओं में राजनीतिक व्यवस्था के प्रति ज्ञान की स्थिति ज्यादा सकारात्मक नहीं है, मात्रा 35 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ ही राज्य की राजनीतिक व्यवस्था का ज्ञान रखती हैं। राज्य की राजनीतिक व्यवस्था की जानकारी रखने वाली महिलाओं इन 35 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने विभिन्न उत्तरों द्वारा अपनी जागरूकता के स्तर को प्रकट किया है

तालिका सं0 10– पंचायत स्तर पर राजनैतिक जानकारी

क्र0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	80	40
2	नहीं	100	50
3	कोई प्रत्युत्तर नही	20	10
योग		200	100

40 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ ही पंचायत व्यवस्था का ज्ञान रखती हैं तथा वे 73 वें व 74 वें संविधान संशोधन से प्राप्त आरक्षण आदि की जानकारी रखती है। 50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं का मानना है कि वे आरक्षण सम्बंधित जानकारी नही रखती है। इस दौरान शोधकर्ती द्वारा एक महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया कि ग्राम पंचायत का प्रतिनिधित्व काने वाली अधिकतर मुस्लिम महिलाएँ अशिक्षित थी तथा उन्हें शासन व्यवस्था सम्बन्धी जानकारी नही थी।

तालिका सं0 11– केन्द्रीय या राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी

क्र0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	40	20

RRIJM 2015, All Rights Reserved

2	नहीं	140	70
3	कोई प्रत्युत्तर नही	20	10
योग		200	100

70 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं का मानना है कि वे केन्द्रीय या राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी जानकारी नही रखती है। उदाहरणतः वे आयुष्मान भारत, उज्जवला योजना, सुकन्या धन योजना आदि की जानकारी भी नही रखती है। 30 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं का मानना है कि वे केन्द्रीय या राज्य सरकार की योजनाओं की जानकारी रखती है तथा वे इसका लाभ भी ले रही है।

तालिका सं0 12– चुनावी चर्चा में भागीदारी

क्र0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	160	80
2	नहीं	30	15
3	कोई प्रत्युत्तर नही	10	05
योग		200	100

राजनीति प्रायः प्रत्येक नागरिक की रूचि का क्षेत्र होता है हालांकि रूचि की मात्राा कम या ज्यादा हो सकती है परन्तु यह मुस्लिम महिलाओं की बिडम्बना ही कही जाऐगी की वे राजनीतिक क्षेत्रों के प्रति उदासीन हैं। अशिक्षा तथा निम्न जागरूकता के कारण 80 प्रतिशत मुस्लिम महिलाएँ चुनावी मुद्दों पर चर्चा नही करती हैं। चुंकि चुनावों के समय ही राजनीतिक मुद्दों को हवा मिलती है, अतः 15 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने माना कि चुनावों के समय ही अपने परिवार व मित्रों से चुनावी मुद्दों पर चर्चा करती हैं। किसी भी प्रश्न पर स्पष्ट राय प्रकट करने के लिए ज्ञान व आत्मविश्वास का होना अति आवश्यक है, अशिक्षा व पर्दा आदि के कारण मुस्लिम महिलाओं में आत्मविश्वास का अभाव है, जिसके कारण मुस्लिम महिलाएँ राजनीतिक मुद्दों पर अपनी बेबाक राय प्रकट नहीं करती है।

भारतीय लोकतंत्र में भले ही राष्ट्रीय राजनीति में मुस्लिम महिलाओं की सहभागिता नगण्य है, परंतु 73 वें तथा 74 वें संविधान संशोधन से प्राप्त आरक्षण के कारण मुस्लिम महिलाओं की ग्राम पंचायत व जिला पंचायत में सहभागिता धीरे–धीरे बढ़ रही है। इस सन्दर्भ में मुस्लिम महिलाओं की राय जानने का प्रयास किया गया जो निम्न तालिकाओं में है।

तालिका सं0 13– पुरूष वर्चस्व का कम होना

क्र0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	21	10.50
2	नहीं	169	84.50
3	कोई प्रत्युत्तर नही	10	5.00
योग		200	100

10.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा कि पंचायत व्यवस्था में महिला भागीदारी में वृद्धि से पुरूषों का वर्चस्व अब कम हो रहा है। जबकि 84.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं के अनुसार पुरूष वर्चस्व अभी भी बना हुआ है। इन महिलाओं का मानना था यदि कोई महिला राजनैतिक पद पर निर्वाचित होती है तो उसके सभी निर्णय उसके पति या पिता लेता है, वह स्वयं रबर–स्टैम्प की भांति कार्य करती है।

तालिका सं0 14– राजनैतिक पद की प्राप्ति

क्र0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	61	30.50
2	नहीं	121	60.50
3	कोई प्रत्युत्तर नही	18	9.00
योग		200	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 30.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कहा कि वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था में अब महिलाओं को भी राजनीतिक पद प्राप्त होने लगे हैं। यदि वह पंचायती राज व्यवस्था में निर्वाचित होती है तो उनको भी राजनीतिक पद प्राप्त होता है। जबकि 60.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं का मानना है कि उन्हें राजनीतिक पद प्राप्त नही होता है। 9 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कोई प्रत्युत्तर नही दिया।

तालिका सं0 15 – महिला सहभागिता में आरक्षण का लाभ

क्र0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हाँ	163	81.50
2	नहीं	12	6.00
3	कोई प्रत्युत्तर नही	25	12.50
योग		200	100

उपरोक्त तालिका के अनुसार 81.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि पंचायती राज में महिलाओं को मिलने वाले आरक्षण के कारण ही उनकी भागीदारी इस क्षेत्र में बढ़ी है। मात्र 6 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने आरक्षण के लाभ को अस्वीकार किया। जबकि 12.50 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने कोई प्रत्युत्तर नही दिया।

तालिका सं0 16– आरक्षण के कारण होने वाले परिवर्तन का लाभ

क्र0 सं0	आरक्षण के कारण परिवर्तन	आवृत्ति	प्रतिशत
1	पूर्णतया परिवर्तन	10	3.00
2	कुछ हद तक परिवर्तन	125	64.50
3	काफी हद तक परिवर्तन	50	25
4	कोई परिवर्तन नही	15	7.50
योग		200	100

उपरोक्त तालिका में आरक्षण से मुस्लिम महिला प्रतिनिधियों में परिवर्तन का स्तर कैसा है, इसे ज्ञात किया गया। जहॉ 64.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि कुछ हद तक परिवर्तन आया है, वहीं 25 प्रतिशत ने का मानना था कि बहुत हद तक

RRIJM 2015, All Rights Reserved

परिवर्तन आया है। 7.5 प्रतिशत मुस्लिम महिलाओं ने यह स्वीकार किया कि कोई परिवर्तन नहीं हुआ, केवल 3 प्रतिशत ने ऐसा स्वीकार किया कि पूर्णतः परिवर्तन हुआ है। अतः तालिका से स्पष्ट हो रहा हैं कि महिला प्रतिनिधित्व तो बढ़ा, परंतु महिलाएं स्वतत्रं रूप से कार्य नहीं कर रही है तथा पुरूषों का हस्तक्षेप अभी भी बना हुआ है।

निष्कर्ष – हरिद्वार जिले के विकासखंड रूड़की की 20 ग्राम पंचायतों की 10–10 मुस्लिम महिलाओं की राजनैतिक जागरूकता व सहभागिता का अध्ययन किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण मुस्लिम महिलाएं यह समझने लगी हैं कि राजनीति में उनकी भागीदारी से समूह व समाज में उनकी स्थिति मजबूत होगी लेकिन जो राजनीति मे महिलाओं की भागीदारी को पसंद नही करती उनका कहना हैं कि राजनैतिक माहौल अच्छा नही होता एवं राजनीति पुरूषों का कार्य क्षेत्र है, इसलिए महिलाओं को राजनीति से दूर रहना चाहिए।

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि महिलाओं की राजनीति में सक्रियता बढ़ी हैं। महिलाओं को प्राप्त आरक्षण के कारण उनकी राजनीति में सहभागिता एवं जागरूकता में भी वृद्धि हुई है। पर्णूतः नहीं कितुं कुछ हद तक परिवर्तन अवश्य आया है। ग्राम पंचायत में महिला भागीदारी के बढ़ने से जहाँ राजनीति पुरूषों का अधिकार क्षेत्र था वहाँ अब महिलाएं भी अपना प्रभाव धीरे–धीरे दिखाने लगीं हैं। राजनीतिक प्रस्थिति में वृद्धि से उसकी सामाजिक प्रस्थिति भी प्रभावित हो रही है।

ग्राम पंचायतों में आरक्षण के फलस्वरूप चयनित महिला जनप्रतिनिधियों को अब बाह्य परिवेश का ज्ञान होने लगा है। बार–बार सभाओं व बैठकों में शामिल होने के कारण उनका संकोच कम हो रहा है तथा आत्मविश्वास बढ़ रहा है। आरक्षण से मुस्लिम महिलाओं में परिवर्तन तो आया है, कितुं परिवर्तन का लाभ उतना नही है, जितना मिलना चाहिए। वे अभी भी स्वतंत्र रूप से कार्य नही कर पा रही है। पुरूषों का वर्चस्व अभी भी बना हुआ है।

संदर्भ सूची –

1- काज़ी, सीमा, मुस्लिम वूमेन इन इण्डिया (रिपोर्ट), अंतर्राष्ट्रीय अल्पसंख्यक अधिकार समूह, 8 मार्च, 1999
2- सिसोदिया, यतेद्रं सिंह, पचांयतीराज एवं अनुसूचित जाति महिला नेतृत्व, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2000
3- आगा, जफर, मुसलमान बनाम आधुनिकता, द संडे इंडियन, 13–26 दिसम्बर, 2010
4- शाह, रवीन्द्र, जन्नत का जो वादा था, आज भी अधुरा है, आउटलुक, नवम्बर–2011
5- भौरोदिया, रूपाली, भारत में महिला की राजनीतिक सहभागिता : एक विश्लेषण, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2013
6- अग्रवाल, सुनीता, ग्रामीण अनुसूचित जातियों की महिलाओं में राजनैतिक जागरूकता, शोध मंथन, दिस0, 2017

RRIJM 2015, All Rights Reserved